गंगा को शुद्ध करने के नाम पर खर्चा बहुत हुआ लेकिन दशा नहीं सुधरी

यह सभ्यता के विकास का बहुत ही विद्रूप और घिनौना चेहरा है। इसे संस्कृति की नैसर्गिक धारा में सड़ांध पैदा करने से परहेज नहीं। इसे अपने सुख और साधन चाहिए। संस्कृति और उसके मूल्य इसके लिए बेमानी हैं। इसकी नजर गंगा की अविरलता और पवित्रता पर नहीं, उसको साफ करने के नाम पर आवंटित बजट पर टिकती है। ऐसा वर्षों से होता आ रहा है। आगे भी होता रहेगा। गंगा चाहे जितनी कराहती रहे, इस सभ्य वर्ग का कोष बढ़ता रहेगा। बूंद-बूंद गंगा जल को जब तरसेगी यह धरती तब भी इस सभ्यता को शायद ही दर्द हो। यह सभ्यता और संस्कृति का युद्ध है, चलेगा ही। गंगा को शुद्ध करने के नाम पर अब तक जितने रुपए खर्च हुए हैं उनसे शायद एक नयी नदी की खुदाई हो सकती थी। लेकिन गंगा को साफ कौन कहे, दिन दशा बिगड़ती ही चली गयी। ऐसा नहीं है कि यह सब गंगा के साथ आज हो रहा है या केवल मैदानी इलाकों में ही हो रहा है, यह सब कुछ वहीं से शुरू हो जाता है जहां से यह निकल रही है। अभी-अभी एक ताजा रिपोर्ट हाथ लगी है। इसमें गोमुख से ही गंगा की गन्दगी की कथा है। यह रिपोर्ट बता रही है कि राष्ट्रीय नदी गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाने के लिए नमामि गंगे परियोजना को लेकर केंद्र सरकार भले ही सक्रिय हो, लेकिन उत्तराखंड में धरातल पर वह गंभीरता नहीं दिखती, जिसकी दरकार है।

गोमुख से हरिद्वार तक

गंगा के मायके गोमुख से हरिद्वार तक ऐसी ही तस्वीर नुमायां होती है। 253 किमी के इस फासले में चिह्नित 135 नालों में से अभी 65 टैप होने बाकी हैं, जबकि इस क्षेत्र के शहरों, कस्बों से रोजाना निकलने वाले 146 एमएलडी (मिलियन लीटर डेली) सीवरेज में से 65 एमएलडी का निस्तारण चुनौती बना है। उस पर सिस्टम की चुस्ती देखिये कि जिन नालों को टैप किए जाने का दावा है, उनकी गंदगी अभी भी गंगा में गिर रही है। उत्तरकाशी, देवप्रयाग, श्रीनगर इसके उदाहरण हैं। इन क्षेत्रों में टैप किए गए नाले अभी भी गंगा में गिर रहे हैं तो जगह-जगह ऐसे तमाम नाले हैं, जिन पर अफसरों की नजर नहीं जा रही।

गंगा एक्शन प्लान

गंगा की स्वच्छता को लेकर 1985 से शुरू हुए गंगा एक्शन प्लान के तहत उत्तराखंड में भी कसरत हुई। तब गोमुख से हरिद्वार तक 70 नाले टैप करने की कवायद हुई और यह कार्य पूर्ण भी हो गया। इस बीच 2015 में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में मामला पहुंचा तो ट्रिब्यूनल ने सभी नालों को गंगा में जाने से रोकने को कदम उठाने के निर्देश दिए। इस बीच केंद्र की मौजूदा सरकार ने गंगा स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित किया और 2016 में अस्तित्व में आई नमामि गंगे परियोजना। प्रधानमंत्री के इस ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत उत्तराखंड में गंगा से लगे शहरों, कस्बों में नाले टैप करने और सीवरेज निस्तारण को सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) पर फोकस किया गया। परियोजना के निर्माण मंडल (गंगा) ने गोमुख से हरिद्वार तक पूर्व के 70 नालों समेत कुल 135 नाले चिह्नित किए। अब 65 में से 58 में कार्य शुरू किया गया है। साथ ही 19 शहरों, कस्बों से रोजाना निकलने वाले 146.1 एमएलडी सीवरेज के निस्तारण को 11 जगह एसटीपी निर्माण का निर्णय लिया गया। बताया गया कि इनमें से कई कार्य पूरे हो चुके हैं, जबकि बाकी में निर्माण कार्य चल रहा है।

नालों की गंदगी सीधे गंगा में

अब थोड़ा दावों की हकीकत पर नजर दौड़ाते हैं। नमामि गंगे में दावा किया गया कि उत्तरकाशी, देवप्रयाग में सभी चिह्नित नाले टैप कर दिए गए हैं। जबकि जमीनी हकीकत यह है कि उत्तरकाशी में टैप किए गए चार नालों में से तांबाखाणी, वाल्मीकि बस्ती व तिलोथ के नजदीक के नालों की गंदगी सीधे गंगा में समाहित हो रही है। इसी प्रकार देवप्रयाग में टैप दर्शाये गए चार नालों का पानी भी ओवरफ्लो होकर गंगा में गिर रहा है। कुछ ऐसा ही आलम अन्य शहरों व कस्बों का भी है। इसके अलावा बड़ी संख्या में ऐसे नाले भी हैं, जो अफसरों को नहीं दिख रहे। फिर चाहे वह उत्तरकाशी में गंगोरी से चिन्यालीसौड़ तक का क्षेत्र हो या फिर चिन्यालीसौड़ से हरिद्वार तक, सभी जगह नालों की गंदगी गंगा में जा रही है। सीवरेज निस्तारण को अभी तक एसटीपी में 79.89 एमएलडी का ही निस्तारण हो रहा है। हालांकि, इनकी क्षमता बढ़ाने व नए एसटीपी भी स्वीकृत हुए हैं, मगर ये तय समय में पूरे हो पाएंगे, इसे लेकर संदेह बना हुआ है। हालांकि, महाप्रबंधक निर्माण मंडल गंगा केके रस्तोगी कहते हैं कि सभी निर्माण कार्य मार्च 2019 तक पूरे करने को प्रयास किए जा रहे हैं।

काशी में अभी भी गिर रहे 33 नाले गंगा में

यहाँ एक और हकीकत की तरफ ध्यान दिलाना उचित लगता है। गंगा के सर्वाधिक महत्व वाली काशी नगरी की दशा पर गौर करने की जरूरत है। यहाँ अभी जब फ्रांस के राष्ट्रपति आये थे तब गिराने वाले सभी नालों को होर्डिंग लगा कर ढाका गया था। हालांकि वाराणसी से ही सांसद बने प्रधानमंत्री के लिए गंगा की सफाई अपने आप में किसी मिशन जैसा है। लेकिन हालत में बहुत सुधार नहीं दिखता। यहाँ स्वच्छ गंगा रिसर्च लेबॉटरी (संकट मोचन फाउंडेशन) के प्रेसिडेंट व बीएचयू प्रोफेसर विशंभर नाथ मिश्र बता रहे हैं कि वाराणसी में वर्तमान में 33 नाले गंगा में गिरते हैं। 350 एमएलडी रॉ सीवेज सीधे गंगा में गिरता है।

प्रयाग में 165 नाले गंगा-यमुना में प्रवाहित तीर्थराज प्रयाग में इस समय छोटे-बड़े 165 नाले गंगा-यमुना में प्रवाहित हो रहे हैं। गंगा कार्य योजना के तहत बने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट भी पूरी क्षमता से काम नहीं कर रहे हैं, जिसके कारण गंदे नालों के साथ स्लॉटर हाउस से निकलने वाले खून व मांस के लोथड़े सीधे गंगा में बह रहे हैं। अटाला स्लॉटर हाउस से बहने वाले खून को सीधे यमुना में प्रवाहित होते कभी भी देखा जा सकता है। गंगा में खून और गंदे नालों का प्रवाह रोकने के लिए समाजसेवी सरदार पतविंदर सिंह और कौशल किशोर से चप्पलों की माला पहनकर संगमतट पर नग्न होकर प्रदर्शन करके लोगों को जागरूक किया। समाजसेवी पतविंदर सिंह ने कहा कि धर्म के नाम पर पैसा कमाने का अफसरों ने धंधा बना लिया है।

कानपुर में हालत बहुत खराब

कानपुर नगर में अधिकारी और कर्मचारी इस ओर लगातार लापरवाही बरत रहे हैं। गंगा सफाई के लिए शहर में कार्य तो किया जा रहा है लेकिन यह सफल कितना होगा कहा नहीं जा सकता है। सैंकड़ों नालियां व छोटे नाले गंगा में लगातार दूषित जल गिरा रहे हैं।

गंगा में जो जल के रूप में पानी दिखाई दे रहा है उसके आधा पानी गन्दे नालों से आता है। सरकार गंगा सफाई में लाखों रुपया खर्च कर रही है लेकिन गंदगी फैलाने वालों पर कार्रवाई नहीं कर रही है। दूसरी तरफ नगर पालिका की तरफ से भी नालों से निकलने वाले पानी को साफ करने का कोई इंतजाम नहीं किया गया है। न ही कोई ऐसा इंतजाम किया कि लोगों के घरों से निकलने वाली गंदगी को समाप्त किया जा सके। शहर में जितने भी छपाई के कारखाने चल रहे हैं, उनको एक जगह स्थापित करने के लिए वर्षों से प्रयास चल रहे हैं लेकिन अभी तक स्थापित नहीं हो सके हैं। इस बारे में जिलाधिकारी मोनिका रानी कह रही हैं कि नाले के पानी को शमशाबाद की तरफ जाने बाले खन्ता नाला में डायवर्जन करा दिया जायेगा। नाले का प्रपोजल भेज दिया गया है, जल्द इस पर काम किया जा रहा है।